चिम्पैंज़ी भी योजना बनाते हैं

स्वीडन के फुरुविक चिड़ियाघर में एक चिम्पैंज़ी के व्यवहार को देखकर वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला है कि ये प्राणी भविष्य के बारे में सोचकर योजना बनाते हैं। सैन्टिनो नाम का यह चिम्पैंज़ी दर्शकों पर पत्थर फेंककर अपनी नाराज़गी का इज़हार करता है।

सैन्टिनो की उम्र इस समय 30 वर्ष है। उसने किशोरावस्था में ही दर्शकों पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया था। चिड़ियाघर रोज़ाना दर्शकों के लिए निश्चित समय पर खुलता है। इससे पहले ही सैन्टिनो काफी सारे पत्थर इकट्ठे करके रख लेता है। ये पत्थर उसे उसके पिंजड़े के आसपास खोदी गई झील के पानी में मिल जाते हैं। पानी में से पत्थर इकट्ठे करके वह इन्हें एक जगह जमा कर लेता है। इसके अलावा उसके पिंजड़े में सीमेंट कांक्रीट से बनी कृत्रिम चट्टानें भी रखी गई थीं। सैन्टिनो इनमें से भी टुकड़े तोड़-तोड़कर दर्शकों पर फेंकने के लिए जमा कर लेता है।

स्वीडन के लुंड विश्वविद्यालय के मैथियास ओस्वाथ का विचार है कि यह व्यवहार दर्शाता है कि सैन्टिनो भविष्य के बारे में सोचता है और उसके लिए योजनाएं बनाता है। उनके अनुसार यह इस बात का प्रमाण है कि चिम्पैंज़ी में भविष्य के प्रति चेतना है।

वैसे पहले भी यह देखा गया है कि चिम्पैंज़ी भोजन प्राप्त करने के लिए औज़ार बनाते हैं। मगर सैन्टिनो के व्यवहार में थोड़ा फर्क है। जब वह दिन में पत्थर जमा करने का काम करता है, तो वह यह काम काफी शान्त भाव से करता है। पत्थर फेंकते समय जो गुस्सा उस पर हावी होता है, पत्थर जमा करते समय उसका एक अंश भी नज़र नहीं आता। दूसरी ओर, भोजन प्राप्त करने के लिए औज़ार बनाते समय उनके दिमाग में एक तत्काल ज़रूरत रहती है - क्षुधा की पूर्ति। पत्थर जमा करते समय उसके दिमाग में एक भावी लक्ष्य और योजना होती है क्योंकि उस समय दर्शक तो सामने होते नहीं। ज़ाहिर है कि उसे पता है कि दर्शक ज़रूर आएंगे।

वैसे अन्य व्यवहार वैज्ञानिकों का कहना है कि मात्र एक उदाहरण के आधार पर सामान्य निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा। *(स्रोत फीचर्स)*